

विचार बिन्दु

मानव का मानव होना ही उसकी जीत है, दानव होना हार है, और महामानव होना चमत्कार है। -डॉ. राधाकृष्णन

राज बदलगयो म्हाने काई

राजस्थान के जाने-माने कवि गणेशीलाल 'उस्ताद' की एक कविता कभी बहुत गाई जाती थी। वह थी 'इण दिस सुख री पडी न झाई, राज बदलगयो म्हाने काई।' यह कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी तब थी जब वह कवि उसे आधी सदी से भी पहले सुनाया करता था। पिछले दशक से तो इस प्रदेश में प्रत्येक पांच साल बाद राज बदलता रहा है। पिछले दिसंबर में हुए विधानसभा चुनावों के बाद अब फिर नई सरकार सचिवालय में काबिज है। पर क्या बदला है? सरकार चलाने वाले राजनेता बदल गए हैं। अनेक जन-प्रतिनिधि बदल गये हैं। नया निजाम है तो सचिवालय तथा अन्य सरकारी दफ्तरों के कमरों में कुछ अफसरों की अदलाबदली हो गई है। मंत्रियों के यहां लगने वाली भीड़ में नये चेहरे भी नजर आने लगे हैं। लंबे समय से बार-बार ऐसे बदलाव देखते आये लोग अब भी पूछ रहे हैं कि, राज बदलगयो म्हाने काई! जनता को राहतें देने वाले नारे नहीं बदले हैं। प्रचार-प्रसार के तौर-तरीके भी नहीं बदले हैं। पहले की तरह ही सड़कों पर सरकार के विज्ञापन करते पोस्टर और होर्डिंग बदस्तूर लगे हैं। अन्य प्रचार माध्यमों में भी नई सरकार अपनी पीठ उसी प्रकार खुद ही ठोकती उपस्थित है जैसे पिछली सरकार थी। प्रचार में सिर्फ मुख्यमंत्री को तस्वीर बदली है। प्रचार-प्रसार के चही टोटके जारी हैं जो निश्चित नेताओं को आमजन से दूर करते हैं और सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में भटकाने रखते हैं। जनसंचार माध्यमों के अध्ययन बार-बार यही दोहराते रहे हैं कि बड़े-बड़े दावे करने वाले अति प्रचार से लक्षित समूह में अरुचि पैदा होती है क्योंकि उससे लोगों में यह धारणा पनपती है कि सरकार ज़मीन पर कुछ नहीं कर रही है इसलिए उसे प्रचार का सहारा लेना पड़ रहा है। विभिन्न अध्ययन बताते हैं कि अति प्रचार से प्रचारित विषय की प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। यह किसी को बताने की जरूरत नहीं कि लोकतंत्र में सबसे पहली प्राथमिकता नेता के जनता से जुड़ाव की होती है। यह जुड़ाव आभासी नहीं होता वह वास्तविक और व्यापकगत होता है। यह जुड़ाव नेता के लोगों से सीधे और लगातार संपर्क से होता है। राजनीतिक दलों के ज़मीनी कार्यकर्ताओं का ज़मीनी तंत्र इसमें उतरकर होता है। लेकिन मौजूदा दौर की विडंबना यह है कि आभासी प्रचार से अभिभूत शीर्ष राजनेता ऐसा मान बैठते हैं कि ट्वीटर और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म के जरिए आम जनता से उनका सतत जुड़ाव बना हुआ है, भले ही अपने ये हैंडल वे खुद न चलाते हों और इन्हें चलाने का जिम्मा जनसंचार का व्यवसाय करने वालों को सौंप रखा हो। उन्हें लगता है कि चुनावों में बाकी का काम उनकी जाति और धर्म आधारित भावनाओं से सनी राजनीति से हो जाएगा। अपने जाति समीकरणों को साधते हुए उन्हें ज़मीनी राजनीतिक कार्यकर्ताओं की कभी-कभी तारीफ कर उन्हें बहलाये रखने का इंतजाम जरूर करना पड़ता है। प्रचार विज्ञान में ओवर एक्सपोजर और ओवर सैचुरेशन का डाना भी पढ़ाया जाता है, मगर जो हज़ुरी वाले राज में अज्ञानी राजनेताओं को यह बातना कोई नहीं चाहता कि अति प्रचार की भीड़ में आप खो जाते हैं। एक समय के बाद लक्षित समूहों का ध्यान मीडिया प्रचार पर कम से कम होता चला जाता है। अति प्रचार से राजनेता अपने लक्षित समूहों द्वारा अनदेखा किए जाने का जोखिम उठाते हैं प्रचार में एक सीमा से ज्यादा जितना एक्सपोजर होता है उतना ही दर्शक प्रस्तुत की जाने वाली चीजों को देखते-देखते ऊब जाते हैं। सरकारें तथा नेता अपने समर्थक और उनका भरोसा और वफ़ादारी भी खो देते हैं। जितना ज्यादा लोग किसी चीज को देखते हैं, उनमें उनकी रुचि उतनी ही कम होती जाती है। इसकी भरपाई के लिए और ज्यादा प्रचार की जरूरत महसूस होने लगती है। वह कि लोगों की रुचि फिर से जगाई जा सके। यह एक दुष्चक्र है जिससे दर्शकों में फिर नई ऊब पैदा होती है। वास्तव में यह चक्र राज में बैठने वालों को बंधा कर रहा है। अति प्रचाररत नेताओं से लोग चिढ़ने भी लगते हैं। वफ़ादार समर्थकों को तभी बनाए रखा जा सकता है जब उनसे सीधे-सीधे भौतिक धरातल पर वफ़ादारी से ही संपर्क बना रहे। ऐसा संपर्क दुर्लभ होता है। इससे नेता को भी ज़मीनी वाकफ़ियत का पता चलता रहता है। आभासी इंफ्लुएंसरों व प्रचारतंत्र के जरिए एकतरफा संवाद होता है। राजनेता को उनसे वापस कोई फीडबैक नहीं मिलता है। इंफ्लुएंसर तथा प्रचार एजेंसियां ठाकुर सुहाना फीडबैक ही देती हैं जिसके परिणाम चुनावों में बार-बार नजर आते हैं।

सरकार का काम ज़मीन पर बोलना चाहिए। अति प्रचार से लोगों में अपेक्षाएं बढ़ती हैं जिसे पूरी करने के लिए शासन की मशीनरी को चुस्त-दुरस्त बनाने के लिए राजनेताओं में न तो रुचि है और न वैसी काबिलियत है। वे अपने-अपने टापुओं में मरजीदानों से घिरे मगन रहते हैं और अपने हितों पर केंद्रित रहते हैं जिससे उनका भौतिक वैभव पीढ़ियों तक बना रहे।

समझना नहीं चाहता। यही कारण है कि जनता अपने नेताओं तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं से तेजी से विमुख होती जा रही है। जब कहा जाता है कि लोकतंत्र कमजोर हो रहा है तो उसके पीछे आमजन का लोकतान्त्रिक संस्थाओं पर से भरोसा मिटना ही है। यह भरोसा जब टूटता है तो लोगों को अपनी सुरक्षा के लिए मजबूरन भ्रष्टाचार की शरण में जाना पड़ता है। यह बुरी व्यवस्था संस्थागत व्यवस्था के साथ खड़ी हो जाती है। यह स्वाभाविक ही पूछा जा सकता है कि 'राज बदलगयो म्हाने काई' कहने वाले वास्तव में क्या चाहते हैं? उनकी क्या आशाएं, अपेक्षाएं और आकांक्षाएं क्या हैं? डिजिटल युग के पहले के संजीदा राजनेता इसे बखूबी समझते थे। हिंदुस्तान की आधी आबादी जिसके पास देश की केवल 10 प्रतिशत संपत्ति है, वह दस लाख से एक करोड़ रुपये दामों वाली महंगी कारें नहीं चाहती, वह अस्पतालों की 24 मंजिली भव्य इमारतें नहीं चाहती, वह वह कुलीन सकुलें या सपने दिखाने वाले उच्च शिक्षा के संस्थान भी नहीं चाहती। वह देश की यह गरीब आबादी पेट भरने लायक काम चाहती है और युवाओं के लिए हाथ में कौशल देने वाली शिक्षा चाहती है। वह चाहती है चिकित्सा की सरकारी व्यवस्था में डॉक्टर तथा अन्य स्टाफ, उसके साथ सम्मान का बर्ताव करे, उसका ठीक से इलाज करने के लिए पूरे समय मौजूद मिले और उसे निजी मुनाफ़ेखोर व्यवस्था के कोंचकड में न धकेले। वह सरकारी स्कूलों में पढ़ाई का बेहतर माहौल चाहती है जहां गर्मी की छुट्टियां खुलने के पहले दिन से ही सभी शिक्षक मौजूद रह कर बच्चों को गुणवत्ता वाली पढ़ाई कराना शुरू करें, उच्च शिक्षा के संस्थानों, जिनमें तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी संस्थान शामिल हैं, में उदरे पानी की सड़ांध की जगह नया निर्मल पानी आये और अकादमिक विषयों के साथ व्यावहारिक विषयों के अनुसंधान हों। युवाओं को केवल डिग्रियां नहीं वास्तविक कौशल वाली शिक्षा मिले। सभी स्वीकृत सरकारी पद भरे रहें। जहां-जहां आमजन का सरकारी व्यवस्था से वास्ता पड़ता है वहां उसकी लूट-खसोट न हो। जनता शासन से आकाश से तारे तोड़ कर लाने की अपेक्षाएं नहीं रखती है। जो शासन अपना मूल धर्म ही नहीं निभा सके वह किस काम का है? बढ़ती असमानता और लोगों की इस भावना को कि राज की व्यवस्था औसत व्यक्ति के विरुद्ध है, सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रचार करके कम नहीं किया जा सकता। उसे धरातल पर ही ठीक किया जा सकता है।

शासन तंत्र के ज़मीनी हालात, जहां आमजन भ्रष्टाचार की सीधी चोट खाता है, प्रचार के घटाटोप से नहीं छुपाये जा सकते। प्रत्येक भारतीय जीवन में एक बार अपना घर बनाने का सपना रहता है। क्या आज कोई यह कह सकता है कि राज्य के नगरीय निकायों में कहीं भी पंजीयन का काम बिना पैसे दिये होता है? वहां भ्रष्टाचार की व्यवस्था संस्थागत रूप ले चुकी है। इसी प्रकार यातायात और निर्माण विभागों में कैसे हाल है, उसे उनके ऑफिसों के बाहर पसरी चाय की थडियों पर चाय पिलाने वाले तक जानते हैं। मशहूर शायर मज़रूह सुल्तानपुरी की ये पंक्तियां याद आती हैं: जाने ना जाने गुल ही न जाने, बाग तो सारा जाने है। सच तो यह है कि प्रचार जनता और शासन के बीच कड़ी नहीं बन सकता। जनता और राजनेताओं के बीच बढ़ती खाई लोगों में खीज पैदा कर रही है तथा आशा, उत्साह और बेहतर भविष्य के लिये राज व्यवस्था पर लोगों का विश्वास डिगता चला जा रहा है। लोग क्या चाहते हैं? वे सिर्फ कानून का राज चाहते हैं। कानून के राज मतलब संविधान के अनुरूप राज्य। सबके लिये बराबरी का राज्य। संविधान के अनुरूप राज्य की व्यवस्था करना निर्वाचित सरकार का कर्तव्य है। संविधान का एक खंड, कार्यपालिका, जिसका काम सबके साथ समता और न्याय का विधिस्मृत व्यवहार करना होता है वह अपने कर्तव्य से पूरी तरह च्युत है। उसमें लगे प्रमुख लोगों की राजनैतिक आकांक्षाएं भी अब परवान पर हैं जो उन्हें संवैधानिक दायित्व से च्युत करती हैं तथा पक्षपाती बनती हैं। राज्य का निगरानी तंत्र बेशर्मी से भ्रष्टाचार की हद पार कर चुका है। कभी एक लोकोक्ति चलती थी कि निर्जला तंत्र लिया हुआ कोई व्यक्ति यदि डुबकी लगा कर नदी के पेंदे में जाकर पानी पी आये तो भगवान संकर को भी नहीं मालूम पड़ेगा। वहीं संकर हो रहा है। इसे धुआंधार प्रचार की ओदरों से छुपाया नहीं जा सकता। सब देख रहे हैं, मगर बदल कुछ नहीं रहा। इसीलिए यह कविता आज भी प्रासंगिक लगती है 'राज बदलगयो म्हाने काई!'

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कोई फर्क नहीं पड़ता है कि कोई हिन्दू है या मुसलमान



महावीर सिंह

आजकल चारों ओर ज़ोरों से, भिन्न-भिन्न धर्मों को मानने वाले, बहुत से बन्धु धर्म के नाम पर नथुने फुला-फुला कर उठा भाषणबाजी करते सुने जाते हैं। टीवी डिबेट्स में यह अक्सर देखा जा सकता है। हाथापाई और गालीगलौज छोड़ कर आप उन धार्मिक लोगों का एक-दूसरे के प्रति आक्रोश देखिए और जज कीजिए कि क्या वे वास्तव में धर्म का मर्म समझते हैं? वे धर्म की अपनी ही समझ को ही, ब्रह्म सत्य मान कर, दूसरों पर थोपने के प्रयास में लगे रहते हैं। विभिन्न धर्मों के नाम पर दुकानें चलाने वाले, कुछ तथाकथित सामाजिक संगठन-दल या यों कहें सेनाएं और पॉलिटेथियन्स ऐसा अधिक करते हैं।

सार्वजनिक जगहों पर, सबसे उठा ऐसे नासमझों की जमात होती है जिन्हें धर्म का कक्का भी नहीं मालूम होता है किन्तु उनकी आंख पर पट्टा बांध कर, विशेष रूप से गढ़े नारों पर नाचने और

नारे लगाने के लिए व्हिसेल बजा दी जाती है। रुकने के लिए जान बूझ कर, व्हिसेल बजाई ही नहीं जाती। नासमझ कूदते रहते हैं। धर्म के प्रति निष्ठा अलग बात है किन्तु अंध निष्ठा केवल बौद्धिक दिवालियापन है। पाठक दिल पर हाथ रख कर स्वयं उतर खोजें कि किस धर्म में धर्म के नाम पर मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का उपदेश दिया है? सबमें ऐसे आचरण की वर्जना है।

जरा विचार करें--जन्म के समय बच्चे का धर्म क्या? कोई नहीं। केवल उसके माता-पिता का धर्म ही परिवार व समाज बच्चे का धर्म मानता है। माता-पिता भिन्न धर्मों के हों तो क्या? बच्चे का धर्म मा का या पिता का मान लिया जाता है। यदि समाज ज्यादा प्रभावी हो तो उनके द्वारा थोपा हुआ धर्म बच्चे का धर्म मान लिया जाता है। जिस रोज बच्चा स्वयं नियंत्रण लेने योग्य हो जाएगा तब वह मा का या पिता का या अन्य कोई या फिर कोई नहीं धर्म अपना सकता है। हाथ रखें दिल पर और उतर दें कि यह काम ईश्वर-खुदा-गाँड करता है? नहीं। किसी भी व्यक्ति का धर्म ईश्वर तय नहीं करता।

धर्म के नाम पर, किसी भी प्रकार की नफरत हिंसा करने के लिए सिखाए-पढ़ाए, अर्धनिष्ठा वाले सामान्य लोगों की बात तो छोड़िए, अभी कुछ दिन पूर्व ही, दो सन्त पुरुष (यदि है तो) एक-दूसरे पर शब्द वाणों की बौध्दर कर रहे थे (आजकल तथाकथित संतों के बीच ऐसा युद्ध सामान्य से है!!!)--मुद्दा था राधा जो

की जन्मस्थली बरसाना या कोई और जगह?? किस के पास 100 प्रतिशत पुष्टा प्रमाण है कि वे कहां पैदा हुईं--और यह कैसे महत्वपूर्ण है? महत्वपूर्ण तो राधा का संदेश है--कृष्ण अर्थात् ईश्वर के प्रति राधा और समस्त ब्रज बालाओं का निश्चल, गैरसंसारिक प्रेम। वो दोनों सन्त पुरुष जिस ढंग से एक-दूसरे के प्रति गुस्सा उगल रहे थे, लगता नहीं उनको राधा के निश्चल प्रेम की समझ थी होगी। ठीक है, कथावाचन से उनको धन प्राप्त होती है। उनका व दूसरे अधिकांश ऐसे दूसरे लोगों का भी धर्म (जिसे वे अध्यात्म ज्ञान कहते हैं) अर्थार्जन तक ही होगा। 5,10-काल से ऐसे बहुत से ऐसे विख्यात-कुख्यात लोगों के नाम तो आम आदमी की जवान सूची हैं। थोड़े-थोड़े अंतराल पर यह सूची बढ़ती ही रहती है।

किस धर्म में कहा गया है कि कोई पशु इतना पूजनीय है कि उसके नाम पर मानव हत्या कर दे? क्या किसी धर्म की पुस्तक में लिखा है कि कथावाचन या सत्संग में या मंदिर या मस्जिद में या धार्मिक तकरीरों, जुलूसों - के बारे में कोई व्यक्ति कोई प्रश्न पूछ ले तो उसे तिरस्कृत-अपमानित किया जाए या उसके साथ मारपीट की जाए? किस धर्म में जातीय आधार पर भेदभाव, अस्पर्शता करने की सीख है?

क्या किसी धर्म में, वयं भगवान ने किन्ही विशेष व्यक्तियों, संगठनों को नामजद किया है कि भगवान, देवता के बारे में केवल व केवल वही बोलने, प्रवचन देने, व्याख्या करने के लिए

अधिकृत है? उनको समझ से भिन्न समझ रखने वाले ईश्वर-खुदा के बन्दे नहीं है क्या? यह मानने में क्या हर्ज है कि ऐसे लोगों को भी अपनी राय रखने का अधिकार है।

क्या कोई धर्म ग्रन्थ स्वयं ईश्वर ने लिखा है? लिखा है तो वह कौन सी ग्रिय भाषा थी जिसमें ईश्वर ने वह ग्रन्थ रचा? क्या वह भाषा हिब्रू थी, संस्कृत थी, फारसी थी, लैटिन या फिर अन्य कोई भाषा?

जो इस लेखक के समझ में आया वह यह है कि अधिक से अधिक यह कहा जाता है कि ईश्वर ने विभिन्न धर्म ग्रन्थों में उल्लेखित उपदेशों में से कुछ स्वयं बोले हैं। लिखने वाला ईश्वर नहीं-वह ओर कोई है, जिसने उन उपदेशों को सुना और दूसरों को सुनाया। जैसा सुनने वाले ने समझा वैसा उसने उन भाषा में लिखा जो उसको को आती थी।

वस्तुतः आज अधिकांश सत्संग, कथावाचन व धर्म के व्यवसायियों को वास्तविक धर्म जो सकारात्मक आत्मोत्थान के लिए होता है, जिसे साधारण समझ की भाषा में आध्यात्म कहते हैं उसकी इन लोगों को कोई खास समझ नहीं होती। सन्त पुरुष कभी न तो जमात में चलते और न जमात लगते, न मुनाझा करते हैं। कहा भी है----"सिंहों के लहंगे नहीं, हंसों की न पांत, लालों की न बोरियां, साधु चले न जमात"

बहुत आदमी से कहते सुने जा सकते हैं कि धर्म का प्रचार-प्रसार करना संविधान प्रदत्त साधिकार है, कोई कैसे

भी करे। बिल्कुल है किन्तु धर्म को समझ भी जाना चाहिए। किसी दूसरे धर्म की नफरती आलोचना को तो मूल अधिकार नहीं है, ना किसी के आस्था स्थलों, आस्था के ग्रन्थों के साथ बेअदबी का अधिकार तो नहीं, न??

भारत के संविधान में एक धारा ओर है जिसको लेकर कभी भी किसी राजनीतिक मंच, संसद आदि व धार्मिक व सामाजिक संगठनों में बात नहीं होती--धारा 51।

यह धारा भारत के नगरिकों के लिए उल्लेखित मूल दायित्वों को बताती है। इसकी एक उपधारा 51(८) है। इसके अनुसार वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना, मानवीय गुणों व किसी भी विषय-बात की पूरी जांच पड़ताल व सुधार का रास्ता। अपना हर नागरिक का दायित्व है। कभी सुनी आपने इस पर कोई सार्वजनिक बहस या इसके लिए कोई राजकीय, नागरिक संगठनों के प्रयास???

कोई भी धर्म माने, किसी भी धर्म-देवता-पुस्तक में आस्था रखें किन्तु दूसरों को भी आपकी ही तरह ईश्वर के बन्दे समझें और उनको भी अपनी सोच, समझ, आस्था रखने दें। ईसानियत यही है जिससे समाज में प्रेम, भाईचारा कायम रहता है। हर, मोहल्ले, नुकड़ पर खुली अधिकांश धर्म व्यवसायियों की दुकानों व बड़े-बड़े मठाधशों के पास ईश्वर से बात करने का कोई गुप्त राजमार्ग नहीं है।

-महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

मनरेगा कार्य के 50 श्रमिकों के मस्टरोलों में फर्जीवाड़ा करने का मामला सामने आया

मसूदा ग्राम पंचायत के मनरेगा कार्य के 50 श्रमिकों की डिमांड देखकर जनरेट किए गए मस्टरोल से जुड़ा हुआ है मामला

मसूदा, (निर्स)। मसूदा पंचायत समिति की रामगढ़ ग्राम पंचायत में मनरेगा कार्य के मस्टरोलों में फर्जीवाड़ा कर सरकारी राशि गबन करने का मामला अभी ठंडा ही नहीं पड़ा कि मंगलवार को मसूदा ग्राम पंचायत के मनरेगा कार्य के 50 श्रमिकों के मस्टरोलों में फर्जीवाड़े करने का मामला सामने आ गया। मामले के तथ्यों के तह तक जाकर की गई जांच पड़ताल में यह बात सामने आई है।

कि सम्बन्धित मनरेगा कार्य के लिए श्रमिकों को आई डिमांड के आधार पर मसूदा ग्राम पंचायत के रोजगार सहायक राकेश साहू ने अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए उक्त नरेगा कार्य के नाम से 50 श्रमिकों के मस्टरोल जनरेट करने हेतु पंचायत समिति को लिख दिया। उधर संबंधित कार्य के मस्टरोल जारी होने से पहले ही जनरेट हुए मस्टरोलों में मेट मुकेश काठाट व सीमा देवी ने

एनएमएस एप पर श्रमिकों की उपस्थिति अपलोड करनी शुरू कर दी। जबकि मौके पर किसी प्रकार का कोई कार्य किसी भी श्रमिक द्वारा नहीं किया जा रहा था।

इस मामले का खास पहलू यह है कि मामला मीडिया कर्मियों की जानकारी में आने के बाद मामले को लेकर की गई जांच पड़ताल के दौरान मामला मसूदा ग्राम पंचायत के संज्ञान में आने पर मसूदा ग्राम पंचायत सरपंच पुष्पकांत धूत व ग्राम विकास अधिकारी हेमराज दरोगा ने सम्बन्धित मस्टरोलों को पंचायत समिति कार्यालय में जमा करवाने के साथ ही पंचायत समिति के विकास अधिकारी को सम्बन्धित मेटों के खिलाफ कार्रवाई करने हेतु भी लिख दिया।

इस मामले को लेकर मसूदा ग्राम पंचायत सरपंच पुष्पकांत धूत व ग्राम विकास अधिकारी हेमराज दरोगा द्वारा मसूदा पंचायत समिति के

- मेटों ने जनरेट मस्टरोलों में एनएमएस एप से श्रमिकों की गलत तरीके से उपस्थित अपलोड करना शुरू कर दिया
- मामला जानकारी में आने पर मसूदा ग्राम पंचायत सरपंच व ग्राम विकास अधिकारी ने मस्टरोलों को पंचायत समिति कार्यालय में जमा करवाया
- पंचायत समिति ने दोनों मेटों को ब्लैक लिस्टेड करने की कार्रवाई करते हुए मसूदा ग्राम पंचायत को निर्देशित किया

विकास अधिकारी के नाम महात्मा गांधी नरेगा योजना में जारी मस्टरोलों को पुनः जमा करवाने हेतु लिखे पत्र में बताया कि बाबू के कुएं के पास नाडी खुदाई कार्य पर पखवाड़ा अवधि 5 जुलाई से 15 जुलाई के लिए 50 श्रमिकों की डिमांड देकर मस्टरोल जनरेट कर दिए गए परंतु मस्टरोलों के प्रिंट नहीं निकले तथा ना ही पंचायत समिति स्तर से

मस्टरोल जारी किए गए। इसके बावजूद मेट मुकेश काठाट व सीमा देवी ने गलत रूप से एनएमएस एप सिस्टम से श्रमिकों की गलत उपस्थिति दर्ज कर दी गई।

इस मामले में की गई जांच पड़ताल में यह बिंदु भी सामने आया कि जिन फर्जी श्रमिकों की एमएसएन एप एप के द्वारा गलत तरीके से उपस्थिति अपलोड की गई उनमें

जोधपुर में मजदूरी कर रहे श्रमिकों तक की फर्जी तरीके से उपस्थिति अपलोड करने की भी जानकारी सामने आई है।

बहरहाल इस मामले को लेकर मसूदा पंचायत के विकास अधिकारी ने संबंधित मेटों को ब्लैक लिस्टेड करने के लिए मसूदा ग्राम पंचायत को निर्देशित किया है।

श्रमिकों की डिमांड के आधार पर जनरेट किए गए मस्टरोलों में मेटों के द्वारा एमएसएन एप के द्वारा श्रमिकों की गलत तरीके से उपस्थिति अपलोड करने की जानकारी मिलने पर संबंधित मस्टरोलों को निकलवाकर पंचायत समिति कार्यालय में जमा करवाने के साथ ही संबंधित मेटों के खिलाफ कार्रवाई करने हेतु पंचायत समिति के विकास अधिकारी को लिखा है।

पंचायत समिति स्तर से मिलने वाले आदेशों निर्देशों के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पांच करोड़ की लागत से तैयार पार्क की सड़क और चारदीवारी पहली बारिश में ही बही

लोगों ने ठेकेदार और नगर परिषद प्रशासन पर मिलीभगत एवं लापरवाही के आरोप लगाए

हिंडौन सिटी, (निर्स)। हिंडौन शहर के सौंदर्य को चार चांद लगाने के लिए व लोगों के फुर्सत के पल को सुकून से गुजरने के लिए लगभग पांच करोड़ रुपए की लागत से तैयार किये गये पार्क की सड़क और चारदीवारी पहली बारिश में ही बह गई, जिससे खिलिया निर्माण की पोल खुल गई। लोगों ने इसमें ठेकेदार और नगर परिषद प्रशासन पर मिलीभगत एवं लापरवाही के आरोप लगाए हैं।

उल्लेखनीय है कि सरकार की योजना के अनुसार प्रत्येक शहर के सौंदर्य को विकसित करने के लिए और पार्क सेल्फी पॉइंट आदि विकसित

हिंडौन सिटी शहर के सौंदर्य को चार चांद लगाने के लिए व लोगों के फुर्सत के पल को सुकून से गुजरने के लिए लगभग पांच करोड़ रुपए की लागत से तैयार किये गये पार्क की सड़क और चारदीवारी पहली बारिश में ही बह गई, जिससे खिलिया निर्माण की पोल खुल गई। लोगों ने इसमें ठेकेदार और नगर परिषद प्रशासन पर मिलीभगत एवं लापरवाही के आरोप लगाए हैं।

उल्लेखनीय है कि सरकार की योजना के अनुसार प्रत्येक शहर के सौंदर्य को विकसित करने के लिए और पार्क सेल्फी पॉइंट आदि विकसित

लोगों ने सरकार एवं नगर परिषद के कार्यों की काफी सरहना भी की। लोगों का आरोप है कि नगर परिषद प्रशासन और संवेदक की मिली भगत से पूरे किए गए इस पार्क के विकास होने के काम में भारी औपचारिकता और लापरवाही बढ़ती गई। नगर परिषद प्रचार प्रसार किया था कि यह शहर के सौंदर्य में चार चांद लगाएगा। जहां लोगों के लिए दर्शनीय स्थल, सेल्फी प्वाइंट तैयार किया। तालाब की रोड साइड पर आई लव हिण्डौन का रोशनी युक्त बोर्ड भी लगाया गया है, जहां सेल्फी प्वाइंट पर लोग शहर के नाम के साथ सेल्फी ले

सकेंगे। जलसेन तालाब में सौंदर्यकरण कार्य के तहत बीच में 100 मीटर व्यास ऊंचा आईलैंड बनाया है। पानी के बीच हरियाली और रोशनी से लकड़क टापू नुमा आईलैंड पर लोगों को झील और जलीय किनारे के पर्यटक स्थल का एहसास होगा ऐसा लोगों ने सोचा था।

जलसेन को शहर पर्यटक स्थल के रूप में वाटर पार्क के रूप में विकसित किया जा रहा है। पार्क में बनाई गई सड़क एवं चारदीवारी के निर्माण होने की पहले ही बारिश में पोल खुल गई है। सीसी सड़क के नीचे डाली गई मिट्टी जमीन के अंदर लगभग

5 से 6 फीट नीचे धंस गई है। सड़क पूरी तरह पोली खड़ी है, जिस पर आने जाने वाले लोगों के लिए कभी भी बड़ा खतरा हो सकता है। इसके अलावा इस तालाब में बनाई गई चारदीवारी जिसमें केवल मिट्टी पर पथरों को बिना कोई सीमेंट आदि के सहारे के रख दिया गया। अब ये बारिश में मिट्टी के तूक जाने से पूरी तरह तबस नहस चुके हैं।

नगर परिषद के नेता प्रतिपक्ष दिनेश सेनी ने इस मामले में नगद प्रसाद प्रशासन और संवेदक पर पूरी तरह लापरवाही और मिलीभगत के आरोप लगाते हुए मामले को जांच करवाने की मांग की है।

राशिफल

बुधवार 10 जुलाई, 2024

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2081, मघा नक्षत्र दिन 10:15 तक, व्यतिपात योग रात्रि 3:09 तक, लिङ्ग करण प्रातः 7:52 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मेघ, बुध-कर्क, गुरु-वृष, शुक-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज रविवीर्य दिन 10:15 तक है। कुमार योग प्रातः 7:52 से दिन 10:15 तक है। भद्रा प्रातः 7:52 तक रहेगी। शुक्र बाल्यव्य रात्रि 9:03 पर समाप्त होगा। आज व्यतिपात पुण्य है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:08 तक, शुभ 10:50 से 12:12 तक, चर 3:56 से 5:38 तक, लाभ 5:38 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:20

मेघ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी और व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटक हुए कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों योजनाओं का क्रियान्वयन होगा। नौकरपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। भागदौड़ बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नौकरपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक प्रशिक्षण बढ़ेगा। संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कुंभ
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आज समय अंगणल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में अंतसंतोष बना रहेगा।

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटक हुए कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।